वर्ष 15 अंक 279 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 11 अक्टूबर 2021

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक

नगर छाया

आप की आवाज़.....

जौं की करें वैज्ञानिक खेती, होगा अधिक लाभ : डॉ. पी.के. गुप्ता

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के जौं अभिजनक डॉक्टर पीके गुप्ता ने बताया कि उत्तर प्रदेश में 1.64 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर जौ की खेती की जाती है। जिसकी उत्पादकता 29.56 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा उत्पादन 4.84 लाख मैट्रिक टन है। डॉ गुप्ता ने बताया कि जौं एक ऐसी फसल है। जिसे कम लागत तथा कम मेहनत कम पानी,कम उपजाऊ भूमि /उसर भूमि भी आसानी से उगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह अनाज नहीं बल्कि औषधि है। जौं में 10 से 12 ब्र प्रोटीन, 2 से 3ब्र वसा तथा 70 से 72ब्र कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। इसके अतिरिक्त जौं में 3 से 5ब्र तक घुलनशील रेशा (बीटा ग्लूकान) पाया जाता है। जोकि रक्त के कोलेस्ट्रॉल एवं शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होता है। उन्होंने बताया की भारत में जौं के उत्पादन का 20 से 25ब्र भाग माल्ट बनाने तथा शेष जानवरों के खाने, सत्तू,सूजी,आटा, शिशु आहार एवं शक्ति वर्धक पेय आदि में प्रयोग होता है। जौं में विटामिन एवं खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं जो अनावश्यक टॉक्सिंस को शरीर से बाहर निकालने में मदद करते हैं। डॉ गुप्ता ने बताया कि जौ की खेती वर्षा आधारित (असिंचित) एवं सिंचित दशाओं में की जाती है। जौ की फसल 8.5 पीएच तक की भूमि में अच्छी उपज देती है जौ की खेती के लिए बलुई से मध्यम भार वाली दोमट मिट्टी श्रेष्ठ होती है। उन्होंने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि पलेवा करने के उपरांत ओट आने पर खेत की 2-3 जुताई कल्टीवेटर से करने के उपरांत खेत को बुवाई हेतु तैयार कर लें। उन्होंने बताया कि असिंचित दशा में जौ की बुवाई हेतु उचित समय 25 अक्टूबर से 10 नवंबर उचित रहता है तथा सिंचित दशा में 10 नवंबर से 25 नवंबर उचित रहता है। बुवाई के पूर्व किसान भाई आब्रत एवं अनावृत कंडवा से बचाव के लिए बीज

शोधन अवश्य करें। इसके लिए बावस्तीन तथा बीटावैक्स को 1ग्रा में मिलाकर 2.5 ग्राम दवा को प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित करें। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह दी है की किसान भाई बुवाई हमेशा लाइन में करें तथा लाइन से लाइन की दूरी 23 सेंटीमीटर तथा गहराई 5 से 7 सेंटीमीटर तक है। उन्होंने कहा की रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग हमेशा मिट्टी की जांच रिपोर्ट के अनुसार करें। संस्तुति दरों के आधार पर असिंचित दशा में नाइट्रोजनः फास्फोरसः पोटाश की 30 ः30ः20 किलो मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। तथा सिंचित दशा में नाइट्रोजनः फास्फोरसःपोटाश 60ः30ः20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय तथा नाइट्रोजन की आधी मात्रा 20 से 25 दिन बाद पहली सिंचाई के बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें। असिंचित दशा में बुवाई के लिए हरीतिमा (के 560) अथवा नर्मदा(के 603) का प्रयोग करें। सिंचित दशा में नई प्रजातियां जैसे प्रखर (के 1055)एवं प्रगति (के 508) का प्रयोग करें। तथा माल्ट हेतु ऋतंभरा (के 551) का प्रयोग करें। ऊसर भूमि यों के लिए के बी 1425 (आज़ाद जौं-33),नरेंद्र जौं-1,आजाद, नरेंद्र जौं-3, एवं आरडी 2794 आदि का प्रयोग कर सकते हैं।छिलका रहित प्रजाति के 1149 (गीतांजलि) विकसित की गयी हैं। बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा उसर भूमियों के लिए 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज का प्रयोग करें।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • सोमवार • 11 अक्टूबर • 2021

जौ की खेती से किसान पा सकते हैं ज्यादा आय

सीएसए कृषि विवि के जौ अभिजनक प्रो.पीके गुप्ता की सलाह

जौ की छिलका रहित के-1149 गीतांजलि प्रजाति भी विकसित

अक्टूबर से नवम्बर तक रहता है जौ की बुवाई का उचित समय

■ कानपुर (एसएनबी)।

अन्य फसलों के मुकाबले जौ की खेती कर किसान ज्यादा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के जौ अभिजनक डॉ.पीके गुप्ता का कहना है कि जौ एक ऐसी फसल है जिसे कम लागत, कम मेहनत, कम पानी व कम उपजाऊ भूमि/ऊसर भूमि में भी आसानी से उगाया जा सकता है। जौ की फसल 8.5 पीएच तक की भूमि में अच्छी उपज देती है। जौ की खेती के लिए बलुई से मध्यम भार वाली दोमट मिट्टी श्रेष्ठ होती है। उन्होंने बताया कि इधर जौ की छिलका रहित प्रजाति के-1149 (गीतांजलि) भी विकसित की गई है।

डॉ. गुप्ता ने बताया कि भारत में जौ के उत्पादन का 20 से 25 प्रतिशत भाग माल्ट बनाने तथा शेष जानवरों के खाने, सत्तू, सूजी, आटा,शिशु आहार, एवं शक्तिवर्द्धक पेय आदि में प्रयोग होता है। जौ की खेती वर्षा आधारित असिंचित व सिंचित दशाओं में की जाती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि पलेवा करने के उपरांत ओट आने पर खेत की दो-तीन जुताई कल्टीवेटर से करने के उपरांत खेत को बुवाई हेतु तैयार कर लें। असिंचित दशा में जौ की बुवाई हेतु उचित समय 25 अक्टूबर से 10 नवम्बर रहता है। सिंचित दशा में 10 से 25 नवम्बर तक उचित रहता है। बुवाई के पूर्व किसान आवृत्त एवं अनावृत्त कंडुवा से बचाव के लिए बीज अवश्य शोधन करने की सलाह उन्होंने दी है। इसके लिए बावस्टीन तथा वीटावैक्स को 1:1 में मिलाकर 2.5 ग्राम दवा को प्रति किग्रा बीज की दर से शोधित करना चाहिए। बुवाई हमेशा लाइन में करनी चाहिए तथा लाइन से लाइन की दूरी 23 सेंटीमीटर तथा गहराई 5 से 7 सेंटीमीटर तक होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग हमेशा मिट्टी की जांच रिपोर्ट के आधार पर ही करना चाहिए। उन्होंने असिंचित दशा में बुवाई के लिए हरीतिमा के-560 अथवा नर्मदा के-603 तथा सिंचित दशा में प्रखर (के-1055) एवं प्रगति (के-508) प्रजाति के बीज का प्रयोग करने की संस्तुति की है। माल्ट हेतु ऋतंभरा (के-551) उपयुक्त है। ऊसर भूमि के लिए केबी 1425 (आजाद जौ-33), नरेन्द्र जौ-1, आजाद, नरेन्द्र जौ-3 एवं आरडी 2794 आदि का प्रयोग करने की बात कही है। बीज की मात्रा 100 किग्रा प्रति हेक्टेयर तथा ऊसर भूमियों के लिए 125 किग्रा प्रति हेक्टयर बीज का प्रयोग करने की सलाह दी गई है।

अनाज नहीं औषधि है जौ : डॉ.गुप्ता ने कहा कि जौ केवल एक अनाज नहीं बल्कि औषधि है। जौ में 10 से 12 प्रतिशत प्रोटीन, 2 से 3 प्रतिशत वसा तथा 70-72 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। इसके अतिरिक्त जौ में 3 से 5 प्रतिशत तक घुलनशील रेशा (बीटा ग्लूकान) पाया जाता है, जो रक्त के कोलेस्ट्राल एवं शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होता है। जौ में विटामिन एवं खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं जो अनावश्यक टॉक्सिंस को शरीर से बाहर निकालने में मदद करते हैं।

जौ अनाज नहीं औषधि, प्रोटीन

वसा व कार्बोहाइड्रेट से भरपूर

कानपुर, 10 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के जौ अभिजनक डॉ पी.के. गुप्ता ने बताया कि उत्तर प्रदेश में1. 64 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर जौ की खेती की जाती है, जिसकी उत्पादकता 29.56 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा उत्पादन 4.84 लाख मैट्रिक टन है। कृषि वैज्ञानिक डॉ गुप्ता ने बताया कि जौ एक ऐसी फसल है। जिसे कम लागत तथा कम मेहनत कम पानी, कम उपजाऊ भूमि /उसर भूमि भी आसानी से उगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यह अनाज नहीं बल्कि औषधि है। जौ में 10 से 12 प्रतिशत प्रोटीन, 2 से 3 प्रतिशत वसा तथा 70 से 72 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। इसके अतिरिक्त जौ में 3 से 5 प्रतिशत तक घुलनशील रेशा (बीटा ग्लूकान) पाया जाता है। जोकि रक्त के कोलेस्ट्रॉल एवं शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होता है। उन्होंने बताया की भारत में जौं के उत्पादन का 20 से 25 प्रतिशत भाग माल्ट बनाने तथा शेष जानवरों के खाने, सत्तू, सूजी, आटा, शिशु आहार एवं शक्ति वर्धक पेय आदि में प्रयोग होता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

मां दुर्गा का पांचवां स्वरूप
मां स्कंदमाता

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

रूस में प्लेन क्रैश में 16 की मौत 12 | 'फाइव स्टार रथ' से गरीब जनता से मिलेंगे... 03

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 02
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ | सोमवार | 11 अक्टूबर, 2021

जौ अनाज नहीं बल्कि ऐसी 'औषधि' जिसे आसानी से उगा सकते है : डॉ. पी. के. गुप्ता

KB 1425 (AZAD BARLEY - 33)

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के जौ अभिजनक डॉ.पी.के.गुप्ता ने जौ की फसल के बारे में बताते हुए कहा कि जौ अनाज नहीं बल्कि औषधि है यह एक ऐसी फसल है जिसे कम लागत, कम मेहनत, कम पानी और कम उपजाऊ भूमि में आसानी से उगाया जा सकता है इसमें 10 से 12 फ़ीसदी प्रोटीन, दो से तीन फ़ीसदी वसा, 70 से 72 फ़ीसदी कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। इसमें पाए जाने वाले बीटा ग्लूकोन के कारण यह रक्त के कोलेस्ट्रॉल और शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होता है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में 1.64 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर जौ की खेती की जाती है। जिसकी उत्पादकता 29.56 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा उत्पादन 4.84 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि जौ में विटामिन और खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो अनावश्यक टॉक्सिंस को शरीर से बाहर निकालने में मदद करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने जौ की खेती करने के तरीकों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग हमेशा मिट्टी की जांच की रिपोर्ट के अनुसार करना चाहिए। उन्होंने बताया कि संस्तुति दरों के आधार पर असिंचित दशा में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की 30:30:20 किलो मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से तथा सिंचित दशा में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश की 60:30:20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करनी चाहिए।

Sign in to edit and save changes to this file.

आज का कानपुर

प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौदहा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, बहराइच में प्रसारित

जौं की करें वैज्ञानिक खेती, होगा अधिक मुनाफा-डॉ पी.के. गुप्ता

आज का कानपुर

कानपुर।चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के जौं अभिजनक डॉक्टर पीके गुप्ता ने बताया कि उत्तर प्रदेश में 1.64 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर जौ की खेती की जाती है जिसकी उत्पादकता 29.56 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा उत्पादन 4.84 लाख मैट्रिक टन है डॉ गुप्ता ने बताया कि जौं एक ऐसी फसल है जिसे कम लागत तथा कम मेहनत कम पानी,कम उपजाऊ भूमि, ऊसर भूमि भी आसानी से उगाया जा सकता है उन्होंने कहा कि यह अनाज नहीं बल्कि औषधि है जौं में 10 से 12त्न प्रोटीन, 2 से 3त्न वसा तथा 70 से 72त्न कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है इसके अतिरिक्त जौं में 3 से 5त्न तक घुलनशील रेशा (बीटा ग्लूकान) पाया जाता है जोकि रक्त के कोलेस्ट्रॉल एवं शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होता है उन्होंने बताया की भारत में जौं के उत्पादन का 20 से 25त्न भाग माल्ट बनाने तथा शेष जानवरों के खाने, सत्तू, सूजी, आटा, शिशु आहार एवं शक्तिवर्धक पेय आदि में प्रयोग होता है जौं में विटामिन एवं खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं जो अनावश्यक टॉक्सिंस को शरीर से बाहर निकालने में मदद करते हैं डॉ गुप्ता ने बताया कि जौ की खेती वर्षा आधारित (असिंचित) एवं सिंचित दशाओं में की जाती है जौ की फसल 8.5 पीएच तक की भूमि में अच्छी उपज देती है जौ की खेती के लिए बलुई से मध्यम भार वाली दोमट मिट्टी श्रेष्ठ होती है उन्होंने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि पलेवा करने के उपरांत ओट आने पर खेत की 2-3 जुताई कल्टीवेटर से करने के उपरांत खेत को बुवाई हेतु तैयार कर लें उन्होंने बताया कि असिंचित दशा में जौ की बुवाई हेतु उचित समय 25 अक्टूबर से 10 नवंबर उचित रहता है।

जौं की करें वैज्ञानिक खेती, होगा अधिक लाभ

▶ जौं में खनिज, लवण भरपूर मात्रा में मिलते

▶ जौं मे 12 प्रतिशत प्रोटीन, तीन प्रतिशत वसा वसा, 72 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट पाया जाता

डीटीएनएन

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के जौं अभिजनक डॉक्टर पीके गुप्ता ने बताया कि उत्तर प्रदेश में 1.64 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल पर जौ की खेती की जाती है। जिसकी उत्पादकता 29.56 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा उत्पादन 4.84 लाख मैट्रिक टन है। डॉ गुप्ता ने बताया कि जौं एक ऐसी फसल है। जिसे कम लागत तथा कम मेहनत कम पानी,कम उपजाऊ भूमि /उसर भूमि भी आसानी से उगाया जा सकता है।

बीटा ग्लूकान कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करता

उन्होंने कहा कि यह अनाज नहीं बल्कि औषधि है। जौं में 10 से 12 न्न प्रोटीन, 2 से 3न्न वसा तथा 70 से 72न्न कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। इसके अतिरिक्त जौं में 3 से 5न्न तक घुलनशील रेशा (बीटा ग्लूकान) पाया जाता है। जोकि रक्त के कोलेस्ट्रॉल एवं शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करने में सहायक होता है। उन्होंने बताया की भारत में जौं के उत्पादन का 20 से 25न्न भाग माल्ट बनाने तथा शेष जानवरों के खाने, सत्तू,सूजी,आटा, शिशु आहार एवं शक्ति वर्धक पेय आदि में प्रयोग होता है। जौं में विटामिन एवं खनिज लवण प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं जो अनावश्यक टॉक्सिंस को शरीर से बाहर निकालने में मदद करते

हैं। डॉ गुप्ता ने बताया कि जौ की खेती वर्षा आधारित (असिंचित) एवं सिंचित दशाओं में की जाती है। जौ की फसल 8.5 पीएच तक की भूमि में अच्छी उपज देती है जौ की खेती के लिए बलुई से मध्यम भार वाली दोमट मिट्टी श्रेष्ठ होती है। उन्होंने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि पलेवा करने के उपरांत ओट आने पर खेत की 2-3 जुताई कल्टीवेटर से करने के उपरांत खेत को बुवाई हेतु तैयार कर लें।

फसल बोने का समय आ गया

उन्होंने बताया कि असिंचित दशा में जौ की बुवाई हेतु उचित समय 25 अक्टूबर से 10 नवंबर उचित रहता है तथा सिंचित दशा में 10 नवंबर से 25 नवंबर उचित रहता है। बुवाई के पूर्व किसान भाई आवृत एवं अनावृत कंड्वा से बचाव के लिए बीज शोधन अवश्य करें।

इसके लिए बावस्तीन तथा बीटावैक्स को 1=1 में मिलाकर 2.5 ग्राम दवा को प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित करें। उन्होंने किसान भाइयों को यह भी सलाह

दी है की किसान भाई बुवाई हमेशा लाइन में करें तथा लाइन से लाइन की दूरी 23 सेंटीमीटर तथा गहराई 5 से 7 सेंटीमीटर तक है। उन्होंने कहा की रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग हमेशा मिट्टी की जांच रिपोर्ट के अनुसार करें।

जौ की बिना छिलके वाली प्रजाति विकसित

संस्तुति दरों के आधार पर असिंचित दशा में नाइट्रोजन- फास्फोरस- पोटाश की 30 =30= 20 किलो मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। तथा सिंचित दशा में नाइट्रोजन- फास्फोरस-पोटाश 60-30-20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय तथा नाइट्रोजन की आधी मात्रा 20 से 25 दिन बाद पहली सिंचाई के बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें। असिंचित दशा में बुवाई के लिए हरीतिमा (के 560) अथवा नर्मदा(के 603) का प्रयोग करें। सिंचित दशा में नई प्रजातियां जैसे प्रखर (के 1055)एवं प्रगति (के 508) का प्रयोग करें। तथा माल्ट हेतु ऋतंभरा (के 551) का प्रयोग करें। ऊसर भूमि यों के लिए के बी 1425 (आज़ाद जौं-33),नरेंद्र जौं-1,आजाद, नरेंद्र जौं-3, एवं आरडी 2794 आदि का प्रयोग कर सकते हैं छिलका रहित प्रजाति के 1149 (गीतांजलि) विकसित की गयी हैं। बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तथा उसर भूमियों के लिए 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर बीज का प्रयोग करें।